साहिब सतनाम गुरूदेवाए नमः

निरंकार–त्रिलोकी महिमां

निरंकार भगवान की महिमां अत्यन्त महान व स्मरणिय है। निरंकार भगवान साहिब सतपुरूष जी के सब्द सूं प्रकट हुए तथा घौर तप उपरांत सतारहां आयोजन कौड़ी काल तक राज करने का वरदान उनसे पाया। साहिब सत्तपुरूष जी के निज सुरति अंश हंसों को निरंकार ने भ्रमण करवाने हेतु त्रिलोकी विस्तार रच डाला। वर्तमान युग तक तीन आयोजन कौड़ी काल समाप्त हो चुका है और चौथी आयोजन कौड़ी काल अभी प्रारमभिक अवस्था में है।

निरंकार ने इस विशाल विक्राल महाकाल रूपी पर मोहिणी माया व मन की सत्ता का विस्तार कर महां भ्रमजाल रूपी सृष्टि रच डाली। निरंकार ने आद्य–शक्ति संग मिल कर अपनी निज ऊर्जा से त्रिदेव प्रकट कर दिये तथा इस त्रिलोकी की व्यवस्था को सुचारू ढंग से चलाने के लिए अनगिनत देवी देव रच डाले। निरंकार की इस क्रूर माया के मोह पाश में फंसा 'हंसा' माया में ऐसा डूबा कि मायाधारी होते ही आत्म रूप कहाया। निरंकार ने इस सब के उपरांत स्वंय को साहिब सत्तपुरूष जैसा दर्शाने के लिए स्वंय को सुन्न में समाहित कर दिया व वहीं से जगत में मन माया रूप का विस्तार कर दिया। जिस से अरबों खरबों वर्ष ही नहीं, मानव तीन आयोजन कौड़ी काल बीत जाने पर भी मुक्त ना हो पाया। निरंकार की माया में बंधा मानव मन वशिभूत स्वंय को हंसा तो दूर, आत्मां भी नहीं समझ रहा व स्वंय को काया समझ अपने निज को भूला हुआ, निरंकार की मन तरंगों अर्थात इंद्रियों का गुलाम बना असहनीय दुखों और कष्टों को झेले जा रहा है। यह सारी त्रिलोकी की गतिविधियां आत्मां, सुरति से चलायेमान हैं, यह मन–काया व त्रिलोकी बिन आत्म निर्जीव अर्थात गतिहीन हैं। मन तरंग रूपी सम्मोहनी माया आत्म को भ्रमित कर सबै गतिविधियां आत्म सुरति से करवा रही है, बिन आत्म सब जग सूना। जगत में मनुष्यों को जो भी पथ प्रदर्शक या गुरू मिलते हैं वे स्वंय भी इन इंद्रियों से मुक्त नहीं होते तो इन्हें कैसे मुक्त करा सकते हैं तभी तो इनका आवागमण नहीं मिट पाता।

ऐसा भी नहीं कि निरंकार रचना की महानता कहीं भी कम हो। ज़रा इसकी महानता तो देखें ! निरंकार भगवान ने जीवों के लिए नाना प्रकार की सुख सुविधायें जैसे खाने के लिए अनगिनत वनस्पतियां व फल, रहने को अदभुद वसुन्धरा, पीने को मीठा जल और जीवों को भौग विलासों के पदार्थों के साथ साथ जीने के लिए अनुकूल वातावरण भी प्रदान किया। इसके साथ साथ रिश्ते नाते ही नही, चांद सूरज, ग्रह नक्षत्र व सारे का सारा ब्रह्मण्ड भी मानव के सुख सुविधाओं हेतु रच डाला। तभी तो मानव हंसा रूप भूला मन माया वश पड़ा घौर कष्ट क्लेशों व सुख दुख को सहे जा रहा है।

ऐसा भी नहीं की निरंकार ने जीवों के लिए मोहपाश रूपी नगरी ही रची हो, बलिक मुक्ति का साधन अर्थात समय समय पर सहज सतमार्ग के संपूर्ण संत व सतगुरू भी इस धरा पर जीवों को मोक्ष प्रदान करवाने हेतु आते रहे और आगे भी आते रहेगें। इसी क्रम में वर्तमान युग के संत शिरोमणि साहिब श्री 'वे नाम' परमहंस जी भी जीवों को सतपुरूष जी की प्रेरणा से उनके उद्धार हेतु लगातार प्रवचनों व सत्संगों में साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व ब्खान कर रहे हैं। जग

जीवों का मोह को ना त्यागना तथा मोक्ष मार्ग की ओर ना चलना ही साहिब सतगुरू श्री 'वे नाम' जी की व्यथा का एकमात्र कारण है। जीव निज के लिए माया मांगे व मोक्ष पद पर नां चले, इतने प्रयासों पर भी मानव स्वंय विनाष पथ पर जाए तो बताऐं निरंकार कहां दोषी ? निरंकार व उसके मन रूप को कौसना सर्वथा अनुचित है। इस त्रिलोकी प्रपंच रचना के बाद भी निरंकार भगवान आदर के पात्र हैं।

मानव अपनी करनी का स्वंय कसूरवार है।

साधकों के अनुभव

सतगुरू चरणों में सुरति सूं श्रद्धा सुमन

सतगुरू सुरति ज्ञान भण्डार संग्रह